दृष्टि The Vision

10 SEP 2019

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-XIII/V (प्रश्नपत्र-1 : संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (N-M, J-S)–M–HL13/5

Name: संदीप कुमार पटेल **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** IP-19/1330

Center & Date: Delhi, 09/09/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0867996

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

राष्ट्रभाषा से तात्पर्य ऐसी भाषा से होता है जो देश के अधिकांश लोगों की प्रमुख भाषा एवं सांस्कृतिक अस्मिता से जुड़ी होती है। भारत में हिंदी को प्राय: राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाता है।

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में स्वाधीनता संग्राम में अनेक संस्थाओं एवं समाज सुधारकों का योगदान रहा जिसके कारण हिन्दी पूरे भारत की संपर्क सूत्र बनी। 'थियोसोफिकल सोसाइटी' का योगदान हिन्दी को अखिल भारतीय भाषा बनाने में महत्वपूर्ण है।

'ऐनीबेसेंट' ने थियोसोफिकल सोसाइटी का पदभार संभालते ही इस बात की आवश्यकता को समझा की यदि भारत को एक सूत्र में जोड़ना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

है तो हिन्दी को अपनाना होगा।।

उन्होंने 'सेंट्रल हिन्दू कॉलेज' की स्थापना की तथा हिन्दी को अनिवार्य शिक्षण मे शामिल कराया। अपनी लीग के कार्यों में उन्होंने हिन्दी को अपनाया तथा पूरे देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कार्य किया।

इस प्रकार थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रयासों से स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी को राष्ट्रभाषा की पदवी प्राप्त हुई जिसे आगे गांधी, पुरूषोत्तम दास टंडन आदि नेताओं ने पल्लवित किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

भक्तिकाल में अवधी रामभक्ति काव्य की प्रमुख भाषा थी। तुलसीदास ने इसे साहित्यिक उत्कर्ष पर पहुँचाया किंतु आलोचकों ने इसमें कुछ सीमाएँ बताई हैं।

सीमाएँ :-

① अवधी गंभीर एवं औदात्यपूर्ण रचनाओं के अनुकूल तो है किंतु लालित्य, शृंगार परक अभिव्यक्ति में यह कमजोर है।

② राम के मिथक से जुड़े होने के कारण अवधी में गंभीरता एवं उत्तरदायित्वपूर्ण काव्य की रचना होने लगी किंतु रीतिकाल में जब मनोरंजनपरक एवं लोक रंजक रचनाओं की प्रधानता बढ़ी तो अवधी इसमें पिछे रह गई तथा इसका स्थान ब्रज भाषा ने लिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this sp

(3) अवधी में उचित ठहराव एवं शब्दशक्ति के कारण यह प्रबंधकाव्य की रचना के अनुकूल है किंतु मुक्तक काव्य की गति एवं प्रवाह को धारण करने में यह असमर्थ है।

(4) अवधी भाषा में लचीलता एवं विदेशी शब्दों की स्वीकार्यता कम होने की वजह से यह आधुनिक भावबोध एवं नवजागरण की चेतना को धारण करने में असफल सिद्ध हुई फलतः खड़ी बोली का विकास हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

19 सदी में खड़ी बोली अपने आरंभिक स्वरूप से परिष्कृत होकर गद्य की प्रमुख भाषा बन रही थी। ऐसे में इसके विकास में 'प्रेस की भूमिका' अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

हिन्दी में प्रथम समाचार पत्र 'उदण्ड मार्तण्ड' के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी 'खड़ी बोली' का तीव्र गति से प्रसार हुआ। सामाजिक सुधार आंदोलन के दौर में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो आधुनिकता एवं नवजागरण की चेतना को अपने शब्दकोश में साथ लेके तथा जनमानस को सरलता से ये संदेश प्रसारित किये जा सकें।

'प्रेस' ने इस कार्य के लिये खड़ी बोली को चुना। राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, राजा शिव प्रसाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान म... कुछ न लिखें।

(Please don't writ... anything in this s...)

ईश्वरचंद्र विद्यासागर आदि नेताओं ने अपने मूल्यों एवं शिक्षाओं को खड़ी बोली में प्रेस के माध्यम से पहुँचाया।

इसके अलावा साहित्यिक पत्रिकाओं जैसे भारतेंदु कृत 'कविवचन सुधा', बालकृष्ण भट्ट कृत 'हिन्दी प्रदीप' आदि के माध्यम से भी खड़ी बोली को परिपक्वता प्राप्त हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ

भाषा और बोली में प्राय: 'समाजभाषा-वैज्ञानिक' दर्जा ~~स्तर~~ अंतर होता है। जब कोई बोली सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों की वजह से व्यापकता प्रदान कर लेती है तो उसे 'भाषा' का दर्जा प्राप्त हो जाता है। फिर भी 'भाषा' का दर्जा देने के लिये कुछ कसौटियाँ होनी चाहियें जो निम्नलिखित हैं –

(क) बोली की एक निश्चित लिपि होनी चाहिए अथवा किसी एक लिपि में लिखे जाने की सुदीर्घ परंपरा हो।

(ख) बोली को प्रयोग करने वालों की संख्या अधिक एवं व्यापक क्षेत्र में हो।

(ग) बोली में साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ हो।

(घ) वह 'बोली' मानकीकृत भी हो तथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्य संबंधित बोलियों से स्पष्ट एवं परिष्कृत हो।

(ङ) दो भिन्न बोलियों में पर्याप्त भाषा-वैज्ञानिक अंतर होने चाहिये।

(च) यदि भाषा का दर्जा दिया जाता है तो इसके पीछे राजनीतिक दबाव नहीं होना चाहिये।

किसी भी बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने के लिये एक 'संवैधानिक आयोग' की स्थापना की जानी चाहिये। जिसमें भाषावैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ शामिल हों।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिंदी का विकास भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान अभूतपूर्व गति से हुआ जिसमें अनेक नेताओं जैसे गांधी, तिलक, लाला लाजपत राय, पुरुषोत्तम दास टंडन आदि का योगदान था।

लाला लाजपत राय का मानना था कि 'हिन्दी को राष्ट्र भाषा' का दर्जा देकर ही भारतीयों में राष्ट्र भावना का संचार किया जा सकेगा। वे हिन्दी के माध्यम से जन आंदोलन चलाने के पक्षधर थे।

लाला लाजपत राय ने 'पेजाब शिक्षा सेवा' एवं 'दयानंद एंग्लो वैदिक कालेज' की स्थापना की। कालेज में उन्होंने अनिवार्य हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था की। कॉलेज के माध्यम से हिन्दी में गहन अनुसंधान एवं तीव्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गति से प्रचार प्रसार हुआ। फलतः राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास हुआ।

स्पष्ट है कि लाला लाजपत राय के अथक प्रयासों से राष्ट्रभाषा हिन्दी को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नई पहचान मिली।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' की व्याकरणिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूर्वी हिन्दी एवं पश्चिमी हिन्दी प्राय: दो अलग - अलग क्षेत्रों बिहार, पूर्वी उत्तरप्रदेश एवं आगरा, मेरठ, पश्चिम भारत से संबंधित है। दरअसल पूर्वी हिन्दी से आशय अवधी या भोजपुरी की विशेषताओं से है जबकि पश्चिमी हिन्दी शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित 'खड़ी बोली' है।

पूर्वी हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ

(1) ध्वनिगत विशेषताएँ -

(क) उकारंतता - चलउ,

(ख) ऐ, औ का स्वर के माध्यम से प्रयोग -
जैसे - अइसा (ऐसा)

(ग) ड़ → र (सड़क → सरक)
ण → न (बाण → बान)
ष → स (मनुष → मनुस)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ~~क्रिया~~ संज्ञा के तीन रूप
लरिका, लरिकवा, लरिकउवा

② व्याकरण संबंधी

(क) सर्वनाम - हमरा, तोहार, ऐकरा, ओकरा

(ख) लिंग परिवर्तन -
इया - बेटा → बिटिया

(ग) कारक व्यवस्था -
नू ~~मैं~~, तूँ, ~~के~~, ~~को~~ को, का

(घ) क्रिया रूप

वर्तमान काल - त रूप (चलत)
भूत काल - ल रूप (खाइल)
भविष्य काल - ब रूप (खाइब)

पश्चिमी हिन्दी की विशेषताएँ

① ध्वनि संबंधी

(क) आकरांतता का प्रयोग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) र -> ड़ (सड़क)
न -> ण (कौण)
ल -> ळ (बाळक)

(ग) ऐ, औ के स्थान पर ऐ ओ का प्रयोग
जैसे - ओरत ,

(घ) ② व्याकरण

(क) संज्ञा का एक ही रूप

(ख) सर्वनाम -
मैं, तू, तुम, कोम,

(ग) लिंग -
आनी - देवर - देवरानी
न - अहीर - अहीरन

(घ) कारक व्यवस्था -
ने, को, से, का, के की

(ङ) क्रिया रूप
वर्तमान काल - ऊँ रूप (आऊँ)
भूत काल - या रूप (गया)
भविष्य काल - गा रूप (जाऊँगा ।)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में आंध्रप्रदेश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त था। राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से कांग्रेस के कार्य, नेताओं के भाषण एवं 'संपर्क भाषा' का कार्य किया जाता रहा है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के दक्षिण भारत जैसे आंध्रप्रदेश में प्रचार-प्रसार के लिये आरंभ में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी एवं 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का योगदान रहा। ~~राजर्षि~~ पुरुषोत्तम दास टंडन ने दक्षिण में प्रसार के हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रसार किया।

महात्मा गांधी के प्रयासों से दक्षिण में 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की शाखा मद्रास में खोली गई। उत्तरोत्तर यह संस्था आंध्रप्रदेश में भी सक्रिय

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

हुई। इस संस्था ने आंध्रप्रदेश में हिन्दी के प्रचार के लिये निम्नलिखित प्रयास किये -

(क) प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना कर हिन्दी भाषा की शिक्षा।

(ख) साहित्यकों को हिन्दी में रचना के लिये प्रोत्साहन।

(ग) स्वाधीनता आंदोलन के मूल्यों को हिन्दी में प्रचारित करना।

(घ) हिन्दी को प्रमुख संपर्क भाषा बनाने का प्रयास करना।

आंध्रप्रदेश में साहित्यकार 'मोटूरि सत्यनारायण' ने हिन्दी में साहित्य की रचना की। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने आंध्रप्रदेश में हिन्दी के लिये माहौल तैयार किया

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जिसके कारण अनेक युवा उत्तर भारत से हिन्दी सीख कर आंध्रप्रदेश गये। उन्होंने हिन्दी को विकसित एवं प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इस प्रकार नेताओं, संस्थाओं एवं साहित्यकारों के अथक प्रयासों से हिन्दी का आंध्रप्रदेश एवं दक्षिण भारत में अभूतपूर्व विकास हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'अपभ्रंश' की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

अपभ्रंश का तात्पर्य भ्रष्ट भाषा से है अर्थात् संस्कृत से होते हुये प्राकृत के बाद जो भाषा भ्रष्ट होकर बनी उसे अपभ्रंश कहा गया। 'सुनीति कुमार चटर्जी' ने इसे केवल भाषिक संक्रमण की अवस्था माना है परंतु सूक्ष्म विवेचन से स्पष्ट होता है कि अपभ्रंश एक स्वतंत्र भाषा थी।

अपभ्रंश का शब्दकोश संस्कृत के सरलीकरण से निर्मित है। वैसे प्राकृत और पालि भी संस्कृत के सरल होने से बनी है किंतु अपभ्रंश की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें विदेशज शब्द भी पर्याप्त मात्रा में आ गये थे।

8वीं एवं 7वीं सदी के बाद पश्चिम से भारत में अरबी एवं फारसियों के

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आगमन से उनके शब्द एवं भाषा का प्राकृत में मिलान हुआ फलतः एक नयी भाषा 'अपभ्रंश' का जन्म हुआ।

आरंभ में यह पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत तक फैली थी किंतु धीरे-धीरे इसका प्रसार पूरे हिन्दी क्षेत्र में हुआ।

यही कारण है कि प्रत्येक प्राकृत से एक अपभ्रंश का ~~निर्मित~~ निर्माण हुआ है; जैसे -

(1) शौरसेनी प्राकृत → शौरसेनी अपभ्रंश
(2) मागधी प्राकृत → मागधी अपभ्रंश
(3) खस प्राकृत → खस अपभ्रंश

अपभ्रंश की शब्दकोशीय प्रवृत्ति को निम्न बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है -
एवं देशज
(क) तद्भव शब्दों की प्रधानता.
जैसे - पति - पंत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) विदेशी तत्वों का भी प्रयोग
जैसे - ~~क~~ कचहरी

अपभ्रंश की शब्दकोशीय प्रवृत्ति को निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है -

"तिक्खा तुरीया न माणिया, गोरी गले न लग्गु"

———— : ————

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

मध्यकाल में सूफी कवियों ने अपनी प्रेमपरक एवं रहस्यात्मक अभिव्यक्तियों के लिये भारतीय लोक जीवन के काव्य एवं अवधी भाषा का प्रयोग किया। अवधी के प्रयोग से सूफी कवियों ने साहित्य के क्षेत्र में उसे नई ऊँचाईयों पर पहुँचा दिया।

सूफी काव्यधारा में प्रथम सूफी काव्य 'दाउद कवि' का 'चंदायन' माना जाता है। इसमें इन्होंने जिस अवधी का प्रयोग किया वह अत्यंत मधुर एवं कलात्मक थी फलत: अवधी का प्रयोग प्राय: सूफी रचनाओं का अभिन्न अंग बन गया। दाऊद का एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"दाऊद कवि जो चाँदा गाई, जेई ने सुना सो
गा मुरझाई।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु अवधी को साहित्य के उत्कर्ष पर पहुँचाने का श्रेय 'मलिक मुहम्मद जायसी' एवं उनकी रचना 'पद्मावत' को है। जायसी ने ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया एवं यथास्थान मुहावरों जैसे - 'सीधी अंगुरी न निकसऊ घीउ' का प्रयोग करते हुये अवधी को कोमल एवं मधुर बना दिया।

जायसी की भाषा की मधुरता की प्रशंसा में स्वयं शुक्ल जी कहते हैं, "जायसी की भाषा का माधुर्य निराला है पर वह भाषा का माधुर्य है, संस्कृत का नहीं।" जायसी ने ध्वनि योजना, संगीतात्मकता एवं लय का पर्याप्त ध्यान रखा है। इन्होंने संयोग एवं वियोग श्रृंगार का इतना मार्मिक वर्णन किया है कि कोई भी पाठक बिना आनंदित हुये नहीं रह सकता।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहाँ पाँव।

जायसी के बाद सूफी काव्यों में संस्कृत के तत्सम शब्दों के अवधीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी। अनुराग बाँसुरी में यह सर्वाधिक मात्रा में है। संभवतः यह प्रभाव तुलसी के 'रामचरितमानस' का रहा होगा।

स्पष्ट है कि सूफी कवियों ने अवधी को मध्यकाल में शीर्ष साहित्यिक भाषा बना दिया जिसे बाद में तुलसी ने उस बिंदु तक पहुँचाया जहाँ तक कम भाषा ही पहुँच पाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी के मानकीकरण के क्षेत्र में व्याकरण संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी भाषा के विकास के लिये भाषा का मानकीकरण आवश्यक होता है ताकि वह भाषा विज्ञान, तकनीक, साहित्य, राजनीति के बदलते परिवेश के हिसाब से खुद को ढाल सके।

हिन्दी भाषा का मानकीकरण सरकार एवं निजी प्रयासो से संभव हुआ है। हालाँकि अभी भी व्याकरणिक एवं शब्दकोशीय अस्पष्टता के कारण हिन्दी के मानकीकरण में समस्याएं सामने आती हैं। जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

(1) संज्ञा संबंधी समस्या - अलग-अलग क्षेत्रों में संज्ञा के अनेक रूप मिलते हैं जैसे - पुर्वी हिन्दी में 'लड़का' का 'लरिकवा' तो पश्चिमी हिन्दी में बालक का बाछक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) सर्वनाम संबंधी समस्या - बिहार में एकवचन उत्तमपुरुष के लिये 'हम' का प्रयोग होता है जो मानक हिन्दी में बहुवचन है।

(3) कारक संबंधी समस्या - कर्ता के लिये प्रायः 'ने' परसर्ग का प्रयोग एवं कर्म के लिये 'को' का प्रयोग होता है किंतु अनेक जगह परसर्ग का लोप हो जाता है जैसे - तुम खाना खाया।

(4) केंद्र एवं राज्य के स्तरों पर पारिभाषिक शब्दावली में एकरूपता नहीं है। जैसे डायरेक्टर के लिये निदेशक, निर्देशक, संचालक आदि अनेक शब्द मिलते हैं।

(5) पूर्वी हिन्दी में लिंग के अनुसार विशेषण अविकारी रहता है जैसे -
छोट लरिकवा, छोट लड़कियाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा ध्वनि संबंधी एवं शब्दकोशीय संबंधी समस्याएँ हिन्दी के मानकीकरण में विद्यमान हैं। इन समस्याओं को प्रायः मानकीकृत स्तर पर सुलझा लिया गया है किंतु इसे प्रयोग करवाने के लिये प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के नामकरण पर प्रकाश डालिये। 15

देवनागरी लिपि प्राचीन ब्राह्मी लिपि की उत्तरी शाखा से विकसित लिपि है जो हिन्दी की मुख्य लिपि है। देवनागरी के नामकरण को लेकर आलोचकों के मध्य अनेक मत हैं; जैसे -

(क) कुछ विद्वान 'देव' शब्द से इसकी उत्पत्ति मानते हुये बताते हैं कि यह देवी-देवताओं एवं धार्मिक साहित्य के प्रदर्शन के लिये उपयोग की जाती थी इसलिये इसका नाम देवनागरी है।

(ख) कुछ आलोचक इसकी उत्पत्ति 'नागर' शब्द से इस प्रकार करते हैं कि यह नगरों में विकसित हुई अतः इसे नागरी लिपि कहा गया एवं संस्कृत देववाणी है और इसका संबंध संस्कृत से होने के कारण इसे देवनागरी कहा गया।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कुछ एक आलोचक इसकी उत्पत्ति 'देवनागर' नामक स्थान से बताते हैं अतः इस लिपि का नाम देवनागरी हुआ।

वस्तुस्थिति यह है कि ये प्रत्येक मान्यता पूर्वानुमान पर आधारित है तथा इनमें से किसी तर्क का प्रत्यक्ष एवं ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है अतः यह कह पाना मुश्किल है कि इस लिपि का नाम देवनागरी क्यों हुआ।

तदापि यह अनुमान लगाया जा सकता है कि देवभाषा संस्कृत एवं प्राचीन नागरी लिपि से संबंध होने के कारण संभवतः इसे देवनागरी कहा गया होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'कहानी का रंगमंच'

रंगमंच से तात्पर्य पात्रों, अभिनय तत्वों, मंच एवं दृश्य विधान की ऐसी व्यवस्था से है जो दर्शकों को रचना का दृश्यात्मक स्तर पर आनंद दे सके। प्राय: नाटकों को रंगमंच पर खेला जाता है किंतु समकालीन दौर में कहानी को भी 'रंगमंच' के माध्यम से प्रतिष्ठित किया गया है।

भारत में इप्टा, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय आदि संस्थाएँ हैं जो रंगमंच के लिये प्रयासरत हैं। इन्होंने कहानियों को रंगमंच पर अवतरित कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कहानी एक लघु विधा है अत: इसमें कम घटनायें एवं सीमित पात्र होते हैं अत: अल्प समय एवं कम खर्च में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसे प्रभावी तौर पर रंगमंच पर प्रदर्शित किया जा सकता है। दर्शक भी छोटी रचनाओं में अधिक बँध जाते हैं क्योंकि कथानक में कसाव होता है।

इब्राहिम अलकाजी जैसे प्रसिद्ध रंग निर्देशकों ने अनेक कहानियों को सफलतापूर्वक रंगमंच पर प्रदर्शित किया है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख कवि हैं जो घोषित तौर पर अपने स्वातंत्र्य चेतना एवं प्रकृति प्रेम के लिये जाने जाते हैं। 'पल्लव' उनकी सुप्रसिद्ध छायावादी रचना है जिसकी भूमिका में उन्होंने छायावाद की विचारधारा को संस्थापित किया है।

छायावाद के दौरान ही अनेक आलोचक इस धारा पर पलायनवादी, घोर व्यक्तिवादी एवं रहस्यवादी का आरोप लगा रहे थे। आचार्य शुक्ल ने छायावाद को स्वच्छंदतावादी काव्य धारा के विकास में व्यवधान माना था। अतः 'पल्लव' की भूमिका में वे इन प्रश्नों का जवाब देते हैं।

पंत ने 'पल्लव' की भूमिका

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

में छायावादी चेतना की सूक्ष्म पड़ताल की और इसे स्वतंत्रता के मूल्यों से युक्त बताया। उनके अनुसार छायावाद आंतरिक स्तर पर व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं समाज की स्वतंत्रता पर ही बल देता है। इसके अलावा उन्होंने मनुष्य और प्रकृति के सहज संबंधों की व्याख्या की।

'पल्लव' की भूमिका को प्राय: छायावाद का घोषणापत्र भी कहा जाता है। इसके माध्यम से छायावादी काव्य को नई दृष्टि से देखा गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता दोनों के प्रस्तावक माने जाते हैं। इनकी काव्य अनुभूति व्यक्ति और समाज के संबंधों, व्यक्ति की आंतरिक वेदनाओं एवं सूक्ष्म दृष्टिकोण से निर्मित है।

'रामस्वरूप चतुर्वेदी' के अनुसार अज्ञेय की काव्य गहन भावनाओं से निर्मित है जो व्यक्ति को स्वतंत्र एवं समाज में सार्थक व्यक्तित्व के साथ स्थापित करना चाहता है। इसके अलावा अज्ञेय पर 'इलियट' के 'निर्वैयक्तिकता' का भी प्रभाव है। इसके अनुसार "रचना करने वाले मन और भोगने वाले मन में एक अंतराल होता है और यह अंतराल जितना अधिक होता है रचना उतनी ही महान होती है।" अज्ञेय लिखते हैं -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"कवि भावनाएँ नहीं है स्रोत।
भावनाएँ खाद है केवल
उनको दबा के रखो
ताकि उनका सार बन धरा को उर्वर करदे।"

अज्ञेय की मूल संवेदना है कि व्यक्ति 'समाज से नहीं', 'समाज में स्वतंत्र' होना चाहिये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद हिन्दी साहित्य में संवेदना एवं शिल्प के स्तर पर नये प्रयोगों का काव्य था। एक तरफ जहाँ संवेदना के स्तर पर इसने स्वतंत्र चेतना, भावनात्मक प्रेम, प्रकृति चित्रण को महत्व दिया तो शिल्प के स्तर पर 'नये अलंकारों' का प्रयोग भी किया।

(1) मानवीकरण - इसके अंतर्गत प्रकृति को मानव रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

"मेघमय आसमान से उतर रही है
संध्या सुंदरी परी सी
धीरे धीरे धीरे"

(2) विशेषण विपर्यय - छायावादी कवियों ने इस अलंकार के प्रयोग से विशेषण के प्रयोग में नवीनता दिखाई। इसके अंतर्गत प्रचलित विशेषणों के स्थान पर विरोधी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

③ ध्वन्यर्थ व्यंजना- ध्वनि एवं शब्दों का इस प्रकार प्रयोग कि संगीतात्मकता एवं लय उत्पन्न हो जाये। जैसे-

" हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

'परख' उपन्यास एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है जिसके रचयिता जैनेन्द्र कुमार हैं। यह व्यक्ति के जीवन में त्याग मूलक प्रेम एवं बलिदान की महत्वता को प्रदर्शित करता है।

'कट्टो' परख उपन्यास का प्रधान नारी चरित्र है। वह अत्यंत उदात्त, कर्तव्यनिष्ट, त्यागमूलक एवं सत्यनिष्ठ महिला है जो प्रेम को जीवन का मूल्य मानती है।

कट्टो ने अपने प्रेमी को पूरे समर्पण भाव से प्रेम किया तथा अपने जीवन में त्याग किया ताकि वह खुश रह सके। इस प्रकार जैनेन्द्र 'कट्टो' के चरित्र के माध्यम से नारी की करुणा एवं प्रेम दृष्टि को व्यक्त करते हैं।

जैनेन्द्र पर फ्रॉयड के अलावा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गोपी का भी प्रभाव है अतः वह प्रेम को अध्यात्म मूलक प्रेम के माध्यम से कट्टो में व्याप्त करते हैं। 'कट्टो' का प्रेम अध्यात्म से ऊपर समाज की ओर उन्मुख हो जाता है और वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ एवं सुख को त्याग देती है।

इस प्रकार कट्टो जैनेन्द्र के प्रमुख नारी चरित्रों में से एक है जो प्रेम के माध्यम से ~~जीवन~~ के समाज निष्ठ हो जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

तुलसीदास हिन्दी साहित्य में अपने समन्वयवादी दृष्टिकोण, लोकमंगल की साधना एवं राम राज्य की अवधारणा के लिये जाने जाते हैं। राम राज्य की अवधारणा तुलसी ने कलियुग की समस्याओं के समाधान में की थी। उनका कलियुग वर्णन रामचरितमानस एवं कवितावली दोनों में मिलता है।

यह सही है कि तुलसी का कलियुग वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का आख्यान है। किंतु तुलसी की दृष्टि रामचरितमानस एवं कवितावली में काफी भिन्न भी दिखाई पड़ती है।

जहाँ रामचरित मानस के के कलियुग वर्णन में वे वर्ण व्यवस्था के भंग होने, धर्म की हानि एवं भक्ति के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गिरते स्तर से परेशान हैं और इसे कलियुग की संज्ञा देते हैं। उन्होंने कहा है कि कलियुग में सभी वर्ण व्यवस्था का पालन नहीं कर रहे हैं, शूद्र ब्राह्मणों के पूज्य नहीं रहे हैं इसके अलावा धर्म की चारो ओर हानि है।

किंतु कवितावली के कलियुग वर्णन में तुलसी की दृष्टि अधिक प्रगतिशील है। यहाँ वे कलियुग के रूप में तद्‌युगीन नारकीय एवं अमानवीय परिस्थितियाँ एवं अकाल जैसी समस्याओं को देखते हैं -

"कलि बारहि बार दुकाल परै।"

अपने कलियुग वर्णन में तुलसी बेरोजगारी एवं गरीबी को समाज की बड़ी चिंता बताते हैं एवं इसके समाधान के लिये राम को भजते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख
बलि को बनिज न चाकरि को चाकरी
जीविकाविहीन लोग सीद्यमान सोच बस
कहैं एक एकन सों-
कहाँ जाई का करि ?"

तुलसी ने कलियुग वर्णन में गरीबी को सबसे बड़ा दुख बताया है। इसके अलावा वे जाति व्यवस्था पर भी चोट करते हैं। इस प्रकार तुलसी का कलियुग वर्णन तत्कालीन राजनीतिक एवं आर्थिक-सामाजिक समस्याओं का जीवंत आख्यान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश आधुनिक भावबोध के प्रसिद्ध 'नाटककार' हैं। उनके प्रत्येक नाटक में "व्यक्ति अपने संबंधों की यंत्रणा को झेलता" है और विसंगतिबोध का शिकार होता है। यही संवेदना 'आधे-अधूरे' में भी दिखाई देती है।

आधे-अधूरे के प्रमुख पात्र ~~को~~ एक दंपत्ति है जो अपने रिश्ते से दुखी है और रिश्तों की कड़वाहट इस बिंदु तक आ चुकी है कि दोनों एक दूसरे से नफरत करते हैं। किंतु फिर भी साथ रहने को विवश है।

पति एवं पत्नी संबंधों में जटिलता एवं अधूरेपन के शिकार होते हैं एवं लघुमानवबोध से ग्रसित हो जाते हैं। वस्तुतः लघुमानवबोध ~~की~~ अस्तित्ववादी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।

(Please don't
anything in th

अवधारणा है जहाँ व्यक्ति परिस्थितियों के सामने विवश है और उनको परिवर्तित नहीं कर पाता। 'आधे-अधूरे' शहरी मध्यवर्गीय जीवन को प्रतिनिधित्व करता है जहाँ व्यक्ति मोहभंग, अकेलापन बदलते संबंधों की जकड़न से परिस्थितियों का शिकार होकर विसंगति से ग्रसित हो जाता है। लघुमानव की यह अवस्था आधे-अधूरे ~~की~~ का केन्द्रीय भाव है।

नाटक में नायिका अनेक संबंधों में आकर अपनी वेदना को कम करने का प्रयास करती है किंतु और अधिक विखंडित हो जाती है। आधे-अधूरे में अस्तित्ववाद की यह संकल्पना कि जब व्यक्ति अपनी इच्छा से निर्णय नहीं लेता तो आत्मविवसन का शिकार हो जाता है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूर्णतः साकार हो उठी है।

आधुनिक भावबोध एवं शहरी मध्यवर्गीय व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने में नाटक ने अभूतपूर्व सफलता हासिल की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी कहानी में उपस्थित जादुई यथार्थवाद पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in thi

'जादुई यथार्थवाद' से तात्पर्य शिल्प के स्तर पर कल्पनाओं, रहस्यों एवं जादुई संकल्पनाओं का प्रयोग करना है ताकि यथार्थ की समुचित एवं वास्तविक अभिव्यक्ति हो सके।

हिंदी कहानी में प्रेमचंद ने यथार्थवाद को स्थापित किया फलत: आगे यथार्थवाद की अनेक धाराएँ जैसे सामाजिक, साम्यवादी, मनोवैज्ञानिक, आधुनिक, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श विकसित हुई जिनका अंतत: उद्देश्य किसी न किसी यथार्थ को अभिव्यक्त करना होता है। हिंदी कहानी में जादुई यथार्थवाद भी ऐसे ही यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिये समकालीन कहानियों में प्रयोग किया जाने लगा है।

जादुई यथार्थवाद का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कर लेखक उस दुर्लभ एवं विद्रूप यथार्थ को व्यक्त कर पाता है जो सामान्य शिल्प के माध्यम से करना संभव नहीं होता है। उदाहरण के लिये एक कहानी में एक बच्चे को ढूँढते-ढूँढते वह बच्चा गायब हो जाता है, जो यह व्यक्त करता है कि समाज में व्यक्ति का महत्व कितना कम हो गया है।

'दरियाई घोड़ा' कहानी प्रमुख जादुई यथार्थवादी शिल्प में लिखी गई कहानी है जो काल्पनिक प्रयोगशीलता के माध्यम से यथार्थ की सार्थक अभिव्यक्ति करती है।

इस प्रकार हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में 'जादुई

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

यथार्थवाद' ने एक नया आयाम जोड़ा है। भले ही यह प्रयोग काल्पनिक है किंतु यथार्थ की सघन अभिव्यक्ति के लिये एक सशक्त उपाय है।

———:———

कृपया इस स्था... कुछ न लिखें।

(Please don't w... anything in thi...

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय की कहानी-कला की तुलना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation